सुभद्रा कुमारी चौहान के साहित्य में नारीवादी आख्यान

Subhadra Kumari Chouhan Ke Sahitya Me Narivadi Akhyan

***Dr.Manjushree Menon, Associate Professor of Hindi, M.E.S.College of Arts, Commerce and Science, Bangaluru.**

भूमिका:-

सुभद्रा जी की कहानियों में अधिकांश बहुओं, विशेषकर शिक्षित बहुओं के दुःखपूर्ण जीवन को लेकर लिखी गई हैं। निस्संदेह वे इसकी अधिकारिणी हैं। किंतु उन्होंने किताबी ज्ञान के आधार पर या सुनी-सुनाई बातों को आश्रय करके कहानियाँ नहीं लिखीं वरन् अपने अनुभवों को ही कहानियों में रूपांतरित किया है। निस्संदेह उनके स्त्री-चरित्रों का चित्रण अत्यंत मार्मिक और स्वाभाविक हुआ है। फिर भी जो बात अत्यंत स्पष्ट है वह यह है कि उनकी कहानियों में समाज व्यवस्था के प्रति एक नकारात्मक घृणा ही व्यक्त होती है। पाठक यह तो सोचता है कि समाज युवतियों के प्रति कितना निर्दय और कठोर है पर उनके चरित्र में ऐसी भीतरी शक्ति या विद्रोह की भावना नहीं पाई जाती जो समाज की इस निर्दयतापूर्ण व्यवस्था को अस्वीकार कर सके। उनके पाठक-पाठिकाएँ इस कुचक्र के छूटने का कोई रास्ता नहीं पातीं। इन कहानियों में शायद ही कहीं वह मानसिक दृढ़ता चरित्र को मिलती है जो स्वेच्छापूर्वक समाज की बलि-वेदी पर बलि होने का प्रतिवाद करें। इसके विरुद्ध उनके चरित्र अत्यंत निरुपाय-से होकर समाज की वहिशिखा में अपने को होम करके चुपके से दुनिया की आँखों से ओझल हो जाते हैं।...मनोविज्ञान के पंडित इसको निगेटिव कैरेक्टर या नकारात्मक चरित्र के लक्षण बताते हैं। जहाँ स्त्री शिक्षा का अभाव है, पुरुष और स्त्री की दुनिया अलग-अलग है, वहाँ तो निश्चित रूप से स्त्री में नकारात्मक चरित्र की प्रधानता होती है । और समाज स्त्री के लिए जिन भूषण रूप आदर्शों का विधान करता है उनमें एकांतनिष्ठा, क्रीड़ा, आत्मगोपन और विनयशीलता आदि नकारात्मक गुणों की प्रधानता होती है। इस दृष्टि से सुभद्रा जी की कहानियों में भारतीय स्त्री का सच्चा चित्रण हुआ है। वे भारतीय स्त्रीत्व की सच्ची प्रतिनिधि बन सकी हैं।

स्त्री एवं मानवीय संवेदना

सुभद्रा जी स्त्री-सरोकारों से जुड़ी हुई कहानियाँ लिखने वाली आजादी से पहले की पहली लेखिका हैं। प्रेमचंद से अलग सुभद्राकुमारी चौहान को इस रूप में देखा जाना आवश्यक है कि वे जिस जाति और लिंग से जुड़ी थीं उसका साहित्य एवं संस्कृति के क्षेत्र में प्रवेश एक घटना थी।

सुभद्राकुमारी चौहान ने स्त्री की निजी स्वाधीनता और उससे जुड़े यथार्थ को अभिव्यक्ति देने के लिए अपनी कविताओं और कहानियों में छायावादी भाषा से विद्रोह किया। छायावादी काव्य की मूलभूत प्रवृत्तियों के साथ समान रूप से उनके जुड़ाव के साथ ही यह तथ्य है कि उनका गद्य-और गद्य ही नहीं, उनकी जीवन प्रक्रिया भी जिंदगी के सहज और जरूरी सरोकारों से जुड़ी हुई थी। सुभद्रा जी के साहित्य में इसीलिए जमीन का वह स्पर्श हमें दिखाई देता है जो हिंदी के पहले बड़े कथाकार प्रेमचंद में है।

स्वयं को गंभीर कलात्मक अतएव उत्कृष्ट घोषित करने वाली संघर्षविरत साहित्यिक दृष्टि ने सुभद्रा जी जैसी संघर्षकारी साहित्य धारा को आज एक किनारे कर दिया है। उस निगाह से देखें तो सुभद्रा जी की कहानियाँ अनलंकृत, सरल और जहाँ-तहाँ से अनगढ़ भी हो सकती हैं किंतु अपनी यथार्थ दृष्टि और सादगी में वे आज भी इतनी विचारमयी और मर्मवेधी हैं कि उन्हें भूल पाना कठिन होगा। उनकी कहानियों के पात्र इतने सहज, निश्छल और पारदर्शी हैं, इतने आवेगपूर्ण और तरल कि हमें मजबूरन उनके प्रति आकृष्ट होना पड़ता है। उनकी रचनाएँ पढ़ने के लिए "पंडितों की भाषा" जानने की आवश्यकता नहीं, उनकी रचनाएँ तो हृदय की भाषा में लिखी गई हैं।

सुभद्रा जी की कहानियों की भाषा अपने वातावरण की अनुगूँज लिए हुए है। कहानियों को पढ़ते हुए बार-बार हमारा ध्यान इसी वातावरण की ओर जाता है। उन्होंने जैसा जिया वही रचा और जो रचा वही किया।

सुभद्रा जी के पास सहज मानवीय संवेदना से पाए गए आसपास, पास-पड़ोस और रोजमर्रा की पारिवारिक जिंदगी के विविधता भरे ब्यौरों की पूँजी है। अपनी इस पूँजी का इस्तेमाल उन्होंने कविताओं में तो किया ही, कहानियों में भी किया। उनकी कहानियाँ सच्चाई को उसकी पूरी विविधता, तीव्रता और सहजता में समेटती और उजागर करती हैं। अपने अनुभूत वास्तव के प्रति उनमें कोई दुराव, कोई संकोच नहीं है, बल्कि एक साहसपूर्ण आदरभाव और स्वीकृति है।

सुभद्रा जी की कहानियों की संवेदना ही नहीं, सक्रिय भागीदारी भी उस वर्ग के साथ है जो शोषित और दलित है। उनकी कहानियों में जो औरत है, वह न सिर्फ दलित और शोषित है बल्कि वह उस वर्ग की प्रतीक भी है। इसके अलावा सीधे-सीधे उस वर्ग के रोजमर्रा के संघर्ष, तकलीफ और यातना में उसकी सक्रिय हिस्सेदारी भी है। उनकी संवेदना "तीन बच्चे" के भिखारियों, जेल की अपराधिनियों, हींग वाले, ताँगे वाले, परित्यक्ताओं, विधवाओं और सामाजिक विसंगतियाँ भोगती औरतों और समाज के उस वर्ग के साथ है जिसे हम सर्वहारा कह सकते हैं।

सामाजिक रूढ़ियों और विसंगतियों को लेकर एक गहरा क्षोभ उनकी सारी कहानियों में व्याप्त है। पारिवारिक त्रासदियों, आदमी और औरत के रिश्तों के संकटों और यातनाओं के प्रति उनमें गहरा मानवीय सरोकार है। 'तीन बच्चे" पुरुष अत्याचार से मुक्ति की कहानी है तो 'कल्याणी', 'मछुए की बेटी' तथा "कैलासी नानी' नारी केंद्रित हैं।

आज के फार्मूलाबद्ध नारीवाद से हटकर हैं उनकी कहानियाँ। स्त्री-विमर्श का ढिंढोरा न पीटकर उन्होंने अपनी कहानियों में स्त्री-विमर्श को मार्मिकता के साथ रेखांकित किया है। स्त्री-स्वातंत्र्य की बातें उन्होंने बहुत स्पष्टता और दृढ़ता के साथ उस समय "दृष्टिकोण" कहानी में कही हैं-'जी हाँ, जितना इस घर में आपका अधिकार है उतना ही मेरा भी है। यदि आप अपने किसी चरित्रहीन पुरुष मित्र को आदर और सम्मान के साथ ठहरा सकते हैं तो मैं भी किसी असहाय अबला को कम से कम आश्रय तो दे ही सकती हूँ।' 'दृष्टिकोण' की निर्मला में हमें सुभद्रा जी का ही व्यक्तित्व मिलता है जो पुरुष के साथ कंधे से कंधा मिलाकर बगैर किसी लिंग-भेदभाव के चलती थी।

उनकी कहानियों को किसी भी तराजू पर तौल लें, उनमें स्त्री सरोकारों की बात दिखेगी तो वे सामाजिक, राजनीतिक विसंगतियों की कसौटी पर भी खरी उतरेंगी। उनकी कहानियाँ स्वतंत्रता आंदोलन के दौर की नारी का मानसिक पटल प्रस्तुत करती हैं। आजादी के पूर्व की भारतीय नारी की दशा और दिशा को सँभालने में वे हमारी बड़ी मदद करती हैं। उनकी नारी केवल राजनीतिक आजादी नहीं चाहती बल्कि सभी प्रकार की गुलामी से मुक्ति चाहती है।

वह 'स्वतंत्रता' नहीं, 'स्वराज्य' चाहती है। परतंत्रता नहीं, स्वानुशासन चाहती है। रूढ़ियों-बंधनों से मुक्त होकर वह स्वनियंत्रण में रहना चाहती है। सुभद्रा जी की सभी कहानियों को हम एक तरह से सत्याग्रही कहानियाँ कह सकते हैं। उनकी स्त्रियाँ सत्याग्रही स्त्रियाँ हैं। दलित चेतना और स्त्रीवादी विमर्श को उठाने वाली सुभद्राकुमारी चौहान हिंदी की पहली कहानीकार हैं-

खूब लड़ी मर्दानी में नारी अस्मिता

सुभद्राकुमारी की कविता 'झाँसी की रानी' महाजीवन की महागाथा है। कुछ ही पंक्तियों की इस कविता में उन्होंने एक विराट जीवन का महाकाव्य ही लिख दिया है। इस कविता में लोक जीवन से प्रेरणा लेकर लोक आस्थाओं से उधार लेकर जो एक मिथकीय संसार उन्होंने खड़ा किया है उससे 'झाँसी की रानी' के साथ सुभद्रा जी भी एक किंवदंती बन गई हैं। भारतीय इतिहास में यह शौर्यगीत सदा के लिए स्वर्णिम अक्षरों में अंकित हो गया है- सिंहावन हिल उठे, राजवंशों ने भ्रकुटी तानी थी बूढ़े भारत में भी आई, फिर से नई जवानी थी गुमी हुई आजादी की कीमत सबने पहचानी थी दूर फिरंगी को करने की सबने मन में ठानी थी।

सुभद्रा कुमारी चौहान की खूब लड़ी मर्दानी वह तो झांसी वाली रानी थी, हिन्दी के सर्वाधिक पढ़े व गाये गये गीतों में से एक है। यह गीत स्वयं में गीत से अधिक वीर गाथा की एक सच्ची कहानी ही है। जिसमें कवयित्री ने रानी लक्ष्मीबाई के जीवन के सारे घटनाक्रम को एक पद्यात्मक कहानी के रूप में इस सजीवता से प्रस्तुत किया है कि पाठक या श्रोता वीर रस से भाव विभोर हो उठता है। यह रचना उनकी पहचान बन गई है। इस गीत की संगीतबद्ध प्रस्तुतियां किसी भी देश राग के आयोजन को ओजस्विता से भर देती है। जबलपुर की ही साधना उपाध्याय जी के दल ने इस गीत पर बेहद खूबसूरत नृत्य नाटिका तैयार की है जिसकी अनेक प्रस्तुतियां जगह-जगह हुई हैं। उनके गीत देश राग से ओत प्रोत हैं, उनके दो कविता संग्रह प्रकाशित हुये, उनकी कहानियां समाज के तानो-बानो के बीच से नारी अस्मिता की पहचान उजागर करती हुई, हृदयस्पर्शी कथानकों को एक सकारात्मक हल की ओर प्रेरित करती हैं।

किसी भी मनुष्य का व्यक्तित्व एवं उसका बौद्धिक विकास, उसके परिवेश, देश, काल, परिस्थिति के अनुरूप होता है। सुभद्रा कुमारी चौहान एक साथ ही प्रगतिशील नारी, गृहिणी, मां, कवि, लेखिका, स्वतंत्रता संग्राम सेनानी, जननेत्री व राजनेता थीं। वे जमीन से जुड़ी हुई थीं, अत: उनके अनुभवों का संसार बहुत विशाल था। उन दिनों स्वतंत्रता आंदोलन चल रहा था। भारतीय समाज में जातिगत, वर्गगत, धर्मगत, लिंगगत रूढियां अपने चरम पर थीं। पर्दा प्रथा, बाल विवाह, छुआछूत, दहेज प्रथा, बहुविवाह, नारी उत्पीडन, सती हो जाने जैसी कुप्रथायें उनके समय समाज में स्त्रियों की प्रगति की बाधा बनी हुईं थी। अपनी कहानियों से सुभद्राजी ने इन कुप्रथाओं के विरुद्ध भरपूर आवाज उठाई। यही कारण है कि उनके साहित्य में कहीं भी नाटकीयता व बनावटीपन नहीं है वरन् वह हृदयस्पर्शी, वास्तविकता के निकट जन मन की अभिव्यक्ति बन पड़ा है। उन्होंने महात्मा गांधी के असहयोग आंदोलन में हिस्सेदारी निभाई स्वाभाविक है कि उनकी लेखनी ने देशप्रेम के मनोभावों का चित्रण अपनी कविता कहानियों में भी किया। सुभद्रा जी का जन्म 1904 में इलाहाबाद के निकट निहालपुर नामक गांव में रामनाथसिंह के जमींदार परिवार में हुआ था। उनके पिता, पति लक्ष्मण सिंह, सखी महादेवी वर्मा ने उनके व्यक्तित्व निर्माण में भरपूर सहयोग किया। उन्होंने जो भी लिखा है वह सब का सब मर्मस्पर्शी, उद्देश्यपूर्ण व शाश्वत बन कर हिन्दी साहित्य की धरोहर के रूप में सुप्रतिष्ठित है। केवल कक्षा 9 वीं

तक शालेय शिक्षा पढ़ी हुई महिला अपने अनुभवों के आधार पर कितना प्रौढ़ व परिपक्व लिख सकती है इसका सशक्तउदाहरण सुभद्रा जी हैं।

उनकी कहानियों में जहां स्त्री सरोकारों की बात दिखती है तो वे सामाजिक, राजनीतिक विसंगतियों की कसौटी पर भी खरी हैं। उनकी कहानियां स्वतंत्रता आंदोलन के दौर की नारी का मानसिक पटल प्रस्तुत करती हैं। आजादी के पूर्व की भारतीय नारी की दशा और दिशा के आकलन में वे हमारी बड़ी मदद करती हैं। उनकी नारी केवल राजनीतिक आजादी नहीं चाहती बल्कि सभी प्रकार की गुलामी से मुक्ति चाहती है। वह स्वतंत्रता नहीं, स्वराज्य चाहती है। परतंत्रता नहीं, स्वानुशासन चाहती है। रूढियों-बंधनों से मुक्त होकर वह स्वनियंत्रण में रहना चाहती है। सुभद्रा जी की सभी कहानियों को हम एक तरह से सत्याग्रही कहानियां कह सकते हैं। उनकी स्त्रियां सत्याग्रही स्त्रियां हैं। दलित चेतना और स्त्रीवादी विमर्श को उठाने वाली सुभद्राकुमारी चौहान हिंदी की पहली कहानीकार हैं।

निष्कर्ष :

सीधे साधे चित्र सुभद्रा कुमारी चौहान का तीसरा व अंतिम कथा संग्रह है। इसमें कुल 14 कहानियां हैं। रूपा, कैलाशी नानी, बिआल्हा, कल्याणी, दो साथी, प्रोफेसर मित्रा, दुराचारी व मंगला 8 कहानियों की कथावस्तु नारी प्रधान पारिवारिक सामाजिक समस्यायें हैं। हींगवाला, राही, तांगेवाला एवं गुलाबसिंह कहानियां राष्ट्रीय विषयों पर आधारित हैं। उनके कथा संग्रहों में कुल 38 कहानियां (क्रमश: पंद्रह, नौ और चौदह) प्रकाशित हैं। सुभद्रा जी की समकालीन स्त्री-कथाकारों की संख्या अधिक नहीं थीं। अपनी व्यापक कथा दृष्टि से वे एक लोकप्रिय नारी विमर्श की ध्वज वाहिका कथाकार के रूप में हिन्दी साहित्य जगत में सुप्रतिष्ठित हैं। समय के साथ भले ही सुभद्रा जी की कहानियो के परिवेश का वर्णन पुराना पड़ गया हो किन्तु आज भी देश भक्ति की भावना, और आज की स्त्रियों के मर्यादा पूर्ण स्वातंत्र्य की प्रेरणादायी इन कहानियों की प्रासंगिकता यथावत बनी हुई है।

संदर्भ ग्रंथ:-

- मुकुल तथा अन्य कविताएँ, सुभद्राकुमारी चौहान, हंस प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण-१९९६, पृष्ठ-४
- मिश्र अनुरोध, रामेश्वरनाथ (जुलाई २००४). राष्ट्रभाषा भारती. कोलकाता: निर्मल प्रकाशन. पृ॰ २०.
- झाँसी की रानी, सुभद्रा कुमारी चौहान, सनगे पब्लिशिंग हाउस, २०२०.